©2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

उपनिषदों में दार्शनिक विवेचन

निलेश मिश्र
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

वेदों के पश्चात् आरण्यक ग्रन्थों में जो आध्यात्मिक जिज्ञासा, मनन, चिन्तन और स्वानुभूति की प्रक्रिया विकसित हुई थी, उसी का सुव्यवस्थित एवं परिपक्व रूप उपनिषदों में दृष्टिगोचर होता है। उपनिषदों का दर्शन विविध विरोधी गुणों का समन्वय है– एक ओर ज्ञानमार्ग की उपादेयता वर्णित है तो दूसरी ओर कर्ममार्ग और भक्तिमार्ग की, एक ओर प्रवृत्तिमार्ग की प्रधानता है तो दूसरी ओर निवृत्तिमार्ग की, एक ओर 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' वर्णित है तो दूसरी ओर द्वैत और त्रैत सिद्धान्तों का वर्णन है। उपनिषदों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह सर्वत्र विवादास्पद स्थलों पर समन्वय प्रस्तुत करता है। जैसे–विद्या और अविद्या, संभूति और असंभूति, श्रेय और प्रेम, ज्ञान और कर्म, प्रवृत्ति और निवृत्ति, एकत्व और अनेकत्व, अद्वैत और द्वैत सिद्धान्तों में समन्वय की स्थापना करता है। उपनिषदों में प्रतिपादित दार्शनिक विचारों की रूपरेखा इस प्रकार है–

1. उपनिषदों में मुख्य रूप से ब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन है। बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है– वह न स्थूल है न सूक्ष्म, न लघु है न गुरु, उसमें न रस है न गन्ध, उसके न आँख है न कान। वह नित्य है। उसमें आकाश ओत–प्रोत है।

   अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्.....अरसमगन्धमचक्षुष्कमश्रोत्रम्.....अस्मिन्नु खल्वक्षरे गार्ग्याकाश ओतश्च प्रोतश्च।[1]

2. ब्रह्म चक्षु, वाणी, मन आदि की गति से परे है। उसी की सत्ता से चक्षु, वाणी, मन, प्राण आदि अपने कार्य करते हैं।[2]

   यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
   तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते।।[3]

3. ब्रह्म सर्वव्यापी है, कर्मों का नियन्ता है, साक्षी है, चेतन है, अद्वितीय और निर्गुण है।

   एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः, सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।

[1] बृहदा0 3–8–8 से 11।
[2] केन0 1–3 से 8।
[3] केन0 1–5।

कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः, साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च।।[4]

4. अद्वितीय ब्रह्म के ईक्षण से ही सृष्टि की रचना होती है।

सत्त्वेव सोम्येदमग्र आसीद् एकमेवाद्वितीयम्। तदैक्षत् बहु स्यां प्रजायेयेति तत्तेजोऽसृजत.....।[5]

5. केनोपनिषद् में ब्रह्म साक्षात्कार को जीवन का लक्ष्य माना गया है। उसके बिना जीवन निःसार है।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।[6]

6. वेदान्त दर्शन में जिस प्रकार अद्वैत ब्रह्म का प्रतिपादन किया जाता है, उसका बीज रूप में विशिष्ट वर्णन माण्डूक्य उपनिषद् में प्राप्त होता है। इसमें ब्रह्म की चार अवस्थाएँ, पंचकोश, कारण शरीरादि के समष्टि और व्यष्टि रूप और तुरीय शिव अवस्था का प्रतिपादन है।

प्रपंचोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः।[7]

7. वेदान्त में प्रसिद्ध 'माया' का सर्वप्रथम वर्णन श्वेताश्वतर उपनिषद् में मिलता है। इसमें प्रकृति को 'माया' और पुरुष को मायिन् (माया का स्वामी) कहा गया है।

मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।[8]

8. श्वेताश्वतर उपनिषद् में ही त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति की सत्ता का प्रतिपादन मिलता है। साथ ही इन तीनों के गुणों का भी वर्णन है। एक–अभोक्ता एवं साक्षी है, दूसरा– कर्मफल भोक्ता है, तीसरा–अचेतन है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति।।[9]

9. श्वेताश्वतर में ही प्रकृति के तीन गुणों एवं उनके लोहित, शुक्ल एवं कृष्ण रूपों का वर्णन है। सांख्य और योग में वर्णित प्रकृति के तीन गुणों का यह बीजरूप में निर्देश है।

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।।[10]

10. वेदान्त में प्रतिपादित 'तत्त्वमसि' महावाक्य का मूल छान्दोग्य उपनिषद् में प्राप्त होता है। उद्दालक मुनि ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को 'तत्त्वमसि' का विस्तृत–उपदेश दिया है।

स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत् सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति।[11]

11. श्वेताश्वतर उपनिषद् में एकेश्वरवाद का भी प्रतिपादन है। वह ईश्वर एक है तथा अपनी शक्तियों से नाना रूपों को धारण करता है। वही अग्नि, सूर्य, वायु, चन्द्रमा, जल आदि विभिन्न रूपों में हैं।

य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगाद्
वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति।।

---

[4] श्वेताश्वतर0 6–11।
[5] छान्दोग्य0 6–2–2–3।
[6] केन0 2–5
[7] माण्डूक्य0 7।
[8] श्वेता0 4–10।
[9] श्वेता0 4–6।
[10] श्वेता0 4–5।
[11] छान्दोग्य0 6–6–12–3।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।

तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म तदापस्तत् प्रजापतिः।[12]

12. छन्दोग्य, बृहदारण्यक और कठ उपनिषदों में पुनर्जन्म का वर्णन मिलता है। कुछ को शुभ कर्मों के आधार पर अमरत्व की प्राप्ति होती है और शेष पुनर्जन्म को प्राप्त करते हैं। कठोपनिषद् में नचिकेता यम के द्वार से लौट कर पुनर्जन्म प्राप्त करता है। मुण्डक (1.2.10) में भी पुनर्जन्म का वर्णन है।

क्षीणे च पुण्ये ततः पुनरावर्तन्ते। ये खलु पृथिव्यां नानायोनिषु जनुः प्रपद्यान्ते मनुष्यजातौ जायन्ते।[13]

ये तु तत्त्वज्ञानशून्या अयज्ञाश्च भवन्ति ते पुनः पुनर्मृत्योर्वशमापद्यन्ते।[14]

13. गीता में प्रतिपादित निष्काम कर्मयोग का आधार ईश उपनिषद् में प्राप्त होता है कि निष्काम कर्म करने वाला व्यक्ति कर्म के बन्धन में नहीं फँसता है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत्ँ समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति, न कर्म लिप्यते नरे।।[15]

14. विश्वबन्धुत्व और समदर्शिता की भावना सर्वप्रथम ईश उपनिषद् में मिलती है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।[16]

15. विद्या और अविद्या अर्थात् ज्ञान–मार्ग एवं कर्म–मार्ग के समन्वय का सुन्दर उपदेश ईश उपनिषद् में प्राप्त होता है। अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से अमरत्व की प्राप्त होती है। इसी प्रकार श्रेय और प्रेय का समन्वय कठ में है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभय्ँ सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यायाऽमृतमश्नुते।।[17]

16. उपनिषदों में कर्मकांड को ब्रह्मविद्या की अपेक्षा बहुत हीन माना गया है। यज्ञ एवं कर्मकांड को मुण्डक उपनिषद् में निकृष्ट साधन एवं पुनर्जन्म का कारण बताया है।

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा.....

जरामृत्युं ते पुनरेवापियन्ति।।[18]

---

[12] श्वेता0 5–1 और 2।
[13] बृहदा0 6–2–15, 16।
[14] छान्दोग्य0।
[15] ईश0 2।
[16] ईश0 6।
[17] ईश0 11।
[18] मुण्डक 1–2–7।

लुडविग स्टाइन ने जिस **एकत्ववाद** को विश्व की समस्याओं के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है, वह दार्शनिक विचार, **विन्टरनित्स** के अनुसार, भारतीय उपनिषदों में तीन हजार वर्ष पहले ही प्रतिपादित हो चुका था।[19]

विन्टरनित्स ने उपनिषदों के महत्व के विषय में जर्मन दार्शनिक **'शोपेनहावर'** के उद्‌गार विस्तृत रूप में उद्‌धृत किए हैं। जिसमें उसने कहा है कि –**''उपनिषद् मेरे जीवन में शान्ति के साधन रहे हैं और मृत्यु में भी शान्ति के साधन रहेंगें।''**[20]

[19] विन्टरनित्स– एच0आई0एल0 पृ0 267।
[20] विन्टरनित्स– एच0आई0एल0 पृ0 266–267।